

1948年

[illegible]

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
 ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४०
 ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०
 ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६०
 ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७०
 ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८०
 ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९०
 ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

॥ श्री गुरुः ॥
 श्री गुरुः ॥
 श्री गुरुः ॥

अथर्ववेद ४ मंड ५) सुंभ्य गोत्र—उत्तराश्वि वसन्तर्तु

[illegible]

8	1	6
3	5	7
4	9	2

ग. मा. उ. सु. १४ मा. १५ वृ.
क. सु. व. उ. सु. मा.
१५. १४ वृ.

वर्ष वैशाख शुक्लशुक्लीया—एकमा स्वानुदाह जय तह जोगरीन्द सोखकी पञ्च छान्न रुक्म कलक वाधय । नान बिको हो विजयुप भाग्य-
दित १ परशुरामकी जन्मजिवि पनि हो यो श्रुति बलाह जिवि भाग्यपुत्री छ, विदुषण पुत्रादि भावदय्य च, पञ्चानु वराधन्य भव । श्री १ को सप्त वर्षत
शुद्धि नाम कलका विजय—छत्र वराह वट्टी कलशकान्त गरीछि स्वर्ग । सादृज, धर्मधन दान तनछि गिन् धुष्ट हुन्छन्, वैशाखविषम एकमाश
वा कल, श्रवणविषमितीक प्राप्त स्वर्गदान पञ्च श्रवणिया जन्मदण्ड गौ मेवा तहले वापनाश सै पुत्रकी वैशाख शुक्ल

प्रोसंवत् २०२८ श्रीराके १८२३ आषाढकृष्ण (वृषभराग) पाषाणसि। उ पा. श्र. ध. ३

[illegible]

सु.आ. जून ६ सौम्य-उत्तरायण-प्रोक्षित

११ पञ्च १२ दिक्कोक्तः । त्रयो दश दिनेषु तदा सङ्गते +
 १२ म. २७५५ वा. ५५५३५ वा. मृगशीर्षे २ कर्काशे रविः ५३
 १३ श्रवणे ३ मिथुनांशे मीनः ४७२८ मृगशीर्षे १ बुधः २८
 १४ च प रवृत्तिः ५६५५३ उ रौहिण्यां ३ शुक्र ५७२५ श्रीपते
 १५ म. ७५५३३८ [= ५३१८८] (मिथुनाजधिराजजर्मोत्सवः
 १६ म. ८२८८५ वा. मृगशीर्षे २ तुलांशे मिथुनेऽर्कः २३२६ मिथु. B
 १७ अष्टमी जन्म मृगशीर्षे ३ मिथुने बुधः ४७३३१
 १८ म. ५७३३० उ. [B १८१६ उ. ३१३ वा.
 १९ म. १७३३५ वा. च पं नि. ६११० वा. मृगशीर्षे ३ बुधिकांशे
 २० योगिनी ११ जन्म काशीयां १ बुधः ५७३१० पुन- ५
 २१ त्रिपुकारः ५३१५ वा. कर्कशे सायनांशः ३५४
 २२ म. २१८ उ. ३०५११ वा. [X स्तुतधायां १ बुधः ३३५
 आश्विनां १ धनशे रविः २५१२२

10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----



मं. मा. स. पु. म. पु.
व. ज. म. मा. ज.
श. मा. स.

[॥ त्रि॥ ५४ कृतिकाया ॥
 शब्दिः २१११ श्री ५
 महेन्द्रवर्धो वृद्धिः
 [॥ न कारयेत् . गग दि
 सुन्या प्राहुः कते सृष्टु
 स्वदा भवत ॥ इति—

॥ वरकन्याको लक्ष्मणाय श्रुत्यादिको विचार ॥

मूढ	अक्षर	अक्षर	विशेष
अक्षर अक्षर	अक्षर अक्षर	अक्षर अक्षर	अक्षर अक्षर
अक्षर अक्षर	अक्षर अक्षर	अक्षर अक्षर	अक्षर अक्षर

विशेष-सूक्तको जन्मपाद आश्रयाको आश्रयाद
कान्ता उपेक्षाको प्रथम २ पाद भवे तुल्य अन्य अशुभ हुन्छ
[+ जगत् ॥ वस्त्रको कल संस्कारादि योग उ । प्रथम

॥ मूल निपात्रकल ॥

आ. मा. अ. स. मा. व. र. म. राजाभा
जावण का. वि. र. वि. नै. म. पं. लो. के. भू. न्यम.
बैशाख ज्येष्ठ मास का. पातले धन लाभ

[ॐ ज्येष्ठाको जन्म ३ घटी मूलको
बलिष्ठको ६ वर्ष सम्पन्नको सुख म हेतु
विवाह आदि शुभ कर्म हुदैन् । अष्टवि

आहूक जन्मवा मृदादि नक्षत्र विचार

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
श्रीपतिनाथ	मनुनाथ	धननाथ	शुभ
शिवके शुभ	धननाथ	मनुनाथ	पतिनाथ

अथ २ घण्टे अमुक्त मूल हुन्छ तेश्वा जम्मेका
। अरु गान्धारीसँगै नै छुभ हुन्छ ।
६ को लचन पमि ल । त्रयोदश दिने पसे विशाहादि

19	सू	सं	मु	रु	पू	क	श
अ३	०	३	५	१	१	३	३

[1] विष्णुपूजा: २५ दिवस, १८ रात्रि, विष्णु १ गुणः २५०
 चन्द्रोदयः श्रीवर्जनाथ रथ यात्रा मूर्तयो १ गुणः ५३३९
 यात्रायां २ मूर्तयो रथः ५५
 अ. ५५११३ उ. ५५१२० या. * उज्ज्वलित १
 पुनर्वसु १ उ. ५५१२० या. + = केतु २५५
 [२] श्रीम. २२२ स्वयंभूपाता श्रीमन्भुवयज्यन्ती
 विष्णुपूजा: १३६ उ. चांद्रोदयः १ गुणः ५३३९
 अ. ५५१२०, ५५१२० या. प. ५५१२० उ. ५५१२० या. =
 (५५१२० उ. ५५१२०) ग्रहणी अतः ५३३९ उ. ५५१२० या. +
 अ. ५५१२० उ. ५५१२० या. ५५१२० पुनर्वसु १ कर्कट २५५
 ग. ५५१२० उ. मन्वादि
 अ. ५५१२० या. हस्तिका ५३३९ अतः ५३३९ अतः ५३३९
 यात्रायां १ गुणः ५३३९
 पुनर्वसु १ मेषादि रथ २५३३ = ३ मधुमे गुणः ५३३९
 अ. ५५१२०, ५५१२० या. पुणिना अतः ५३३९ उ. ५५१२० या.
 रागा पूजा १५ दिवस, १८ रात्रि मन्वादि: ५३३९ या. ५३३९

29	20	30	40	50	60	70	80	90	100
100	200	300	400	500	600	700	800	900	1000
1100	1200	1300	1400	1500	1600	1700	1800	1900	2000
2100	2200	2300	2400	2500	2600	2700	2800	2900	3000
3100	3200	3300	3400	3500	3600	3700	3800	3900	4000
4100	4200	4300	4400	4500	4600	4700	4800	4900	5000
5100	5200	5300	5400	5500	5600	5700	5800	5900	6000
6100	6200	6300	6400	6500	6600	6700	6800	6900	7000
7100	7200	7300	7400	7500	7600	7700	7800	7900	8000
8100	8200	8300	8400	8500	8600	8700	8800	8900	9000
9100	9200	9300	9400	9500	9600	9700	9800	9900	10000

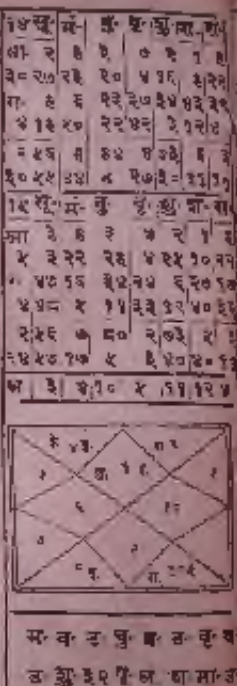


५. २००, ३. ३५, ४. ५५, ५. ७५
 ६. १००, २. २०, ३. ३०, ४. ४०

श्रीसंवत् २०२२ श्रीशके १९२३ आश्विन कृष्णः (विज्ञाया) पादश्राणि-४ घटाति। गुरुर्द्वि ७) सौम्यशुभ-उत्तरायण-दक्षिणायनश्रीष्म-वर्षतः

१. सु.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
१. सु.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००

अथ हरिश्चन्द्र चित्रम्—अथर्वबुध्न ११ विधि अनुग्राहको अथर्वविधिनाम। अथर्वबुध्नो अथर्व शब्द शुभल १३ विधि अथर्वका मध्यमोपायाया
परिवर्तन (कोट्यो फर्कनु) करिक बुध्न ११ विधि देवताको अन्त्यवर्णियायाम् उत्थान बुध्न, मसैक ई वातुमास भेतिन्तु । यो वातुमासम्। जप म् विधम्
धम कर्म उपवास जो मराष्ट्र धमको परा पक्ष मिल्दुः । आवाणको संमयमोका काश्चन । उपवास अपण । नैक मान्न मरे विद्या धन पुत्रको काम बुध्न ।
उक्तम्—सोमय देवत कार्य भावणे नै पथा विधिः । इत्येवोपायस्य कार्य अधव । निजि भोजनम् । आत्मा—मने पुत्र । निधेनी धनवान् नयत् । अविजो
नयने विद्या मति धर्म अदी रेषु ॥ तदी त्तान् दूक—मिदककंदयोर्मध्ये सर्वा नयो रक्षेयका । तामुत्तमं नै कविचर्चयित्वा समुद्रमात् तत्पराहत्—आवाणी ।



२८ मृ ३३ वृ १५ का रा

[illegible]

म. क. उ. म. पु. द. प.
मा. क. म. मा. श. मा. त.
का. मा. द. मा. म. त.

सं. विवरण - १३२८ खंडांकित ४७०५ आश्रितनृपकल क म्हाकाड) पापक्षीणा रपा अति अथ यमा (अमर) प अत्र ६०, मो-याय्यसीत-दक्षिणा का दूत

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००

[illegible]

२५२५ मं पु ५५५५ मं

[illegible][illegible]

मन्त्रः शुद्ध भवति मन्त्र
शुद्ध भवति मन्त्र

[illegible]

गोपनीय २०										गोपनीय २०									
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०
१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०
१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
१८१	१८२	१८३	१८४	१८५	१८६	१८७	१८८	१८९	१९०	१९१	१९२	१९३	१९४	१९५	१९६	१९७	१९८	१९९	२००
२०१	२०२	२०३	२०४	२०५	२०६	२०७	२०८	२०९	२१०	२११	२१२	२१३	२१४	२१५	२१६	२१७	२१८	२१९	२२०
२२१	२२२	२२३	२२४	२२५	२२६	२२७	२२८	२२९	२३०	२३१	२३२	२३३	२३४	२३५	२३६	२३७	२३८	२३९	२४०
२४१	२४२	२४३	२४४	२४५	२४६	२४७	२४८	२४९	२५०	२५१	२५२	२५३	२५४	२५५	२५६	२५७	२५८	२५९	२६०
२६१	२६२	२६३	२६४	२६५	२६६	२६७	२६८	२६९	२७०	२७१	२७२	२७३	२७४	२७५	२७६	२७७	२७८	२७९	२८०
२८१	२८२	२८३	२८४	२८५	२८६	२८७	२८८	२८९	२९०	२९१	२९२	२९३	२९४	२९५	२९६	२९७	२९८	२९९	३००
३०१	३०२	३०३	३०४	३०५	३०६	३०७	३०८	३०९	३१०	३११	३१२	३१३	३१४	३१५	३१६	३१७	३१८	३१९	३२०
३२१	३२२	३२३	३२४	३२५	३२६	३२७	३२८	३२९	३३०	३३१	३३२	३३३	३३४	३३५	३३६	३३७	३३८	३३९	३४०
३४१	३४२	३४३	३४४	३४५	३४६	३४७	३४८	३४९	३५०	३५१	३५२	३५३	३५४	३५५	३५६	३५७	३५८	३५९	३६०
३६१	३६२	३६३	३६४	३६५	३६६	३६७	३६८	३६९	३७०	३७१	३७२	३७३	३७४	३७५	३७६	३७७	३७८	३७९	३८०
३८१	३८२	३८३	३८४	३८५	३८६	३८७	३८८	३८९	३९०	३९१	३९२	३९३	३९४	३९५	३९६	३९७	३९८	३९९	४००
४०१	४०२	४०३	४०४	४०५	४०६	४०७	४०८	४०९	४१०	४११	४१२	४१३	४१४	४१५	४१६	४१७	४१८	४१९	४२०
४२१	४२२	४२३	४२४	४२५	४२६	४२७	४२८	४२९	४३०	४३१	४३२	४३३	४३४	४३५	४३६	४३७	४३८	४३९	४४०
४४१	४४२	४४३	४४४	४४५	४४६	४४७	४४८	४४९	४५०	४५१	४५२	४५३	४५४	४५५	४५६	४५७	४५८	४५९	४६०
४६१	४६२	४६३	४६४	४६५	४६६	४६७	४६८	४६९	४७०	४७१	४७२	४७३	४७४	४७५	४७६	४७७	४७८	४७९	४८०
४८१	४८२	४८३	४८४	४८५	४८६	४८७	४८८	४८९	४९०	४९१	४९२	४९३	४९४	४९५	४९६	४९७	४९८	४९९	५००
५०१	५०२	५०३	५०४	५०५	५०६	५०७	५०८	५०९	५१०	५११	५१२	५१३	५१४	५१५	५१६	५१७	५१८	५१९	५२०
५२१	५२२	५२३	५२४	५२५	५२६	५२७	५२८	५२९	५३०	५३१	५३२	५३३	५३४	५३५	५३६	५३७	५३८	५३९	५४०
५४१	५४२	५४३	५४४	५४५	५४६	५४७	५४८	५४९	५५०	५५१	५५२	५५३	५५४	५५५	५५६	५५७	५५८	५५९	५६०
५६१	५६२	५६३	५६४	५६५	५६६	५६७	५६८	५६९	५७०	५७१	५७२	५७३	५७४	५७५	५७६	५७७	५७८	५७९	५८०
५८१	५८२	५८३	५८४	५८५	५८६	५८७	५८८	५८९	५९०	५९१	५९२	५९३	५९४	५९५	५९६	५९७	५९८	५९९	६००
६०१	६०२	६०३	६०४	६०५	६०६	६०७	६०८	६०९	६१०	६११	६१२	६१३	६१४	६१५	६१६	६१७	६१८	६१९	६२०
६२१	६२२	६२३	६२४	६२५	६२६	६२७	६२८	६२९	६३०	६३१	६३२	६३३	६३४	६३५	६३६	६३७	६३८	६३९	६४०
६४१	६४२	६४३	६४४	६४५	६४६	६४७	६४८	६४९	६५०	६५१	६५२	६५३	६५४	६५५	६५६	६५७	६५८	६५९	६६०
६६१	६६२	६६३	६६४	६६५	६६६	६६७	६६८	६६९	६७०	६७१	६७२	६७३	६७४	६७५	६७६	६७७	६७८	६७९	६८०
६८१	६८२	६८३	६८४	६८५	६८६	६८७	६८८	६८९	६९०	६९१	६९२	६९३	६९४	६९५	६९६	६९७	६९८	६९९	७००
७०१	७०२	७०३	७०४	७०५	७०६	७०७	७०८	७०९	७१०	७११	७१२	७१३	७१४	७१५	७१६	७१७	७१८	७१९	७२०
७२१	७२२	७२३	७२४	७२५	७२६	७२७	७२८	७२९	७३०	७३१	७३२	७३३	७३४	७३५	७३६	७३७	७३८	७३९	७४०
७४१	७४२	७४३	७४४	७४५	७४६	७४७	७४८	७४९	७५०	७५१	७५२	७५३	७५४	७५५	७५६	७५७	७५८	७५९	७६०
७६१	७६२	७६३	७६४	७६५	७६६	७६७	७६८	७६९	७७०	७७१	७७२	७७३	७७४	७७५	७७६	७७७	७७८	७७९	७८०
७८१	७८२	७८३	७८४	७८५	७८६	७८७	७८८	७८९	७९०	७९१	७९२	७९३	७९४	७९५	७९६	७९७	७९८	७९९	८००
८०१	८०२	८०३	८०४	८०५	८०६	८०७	८०८	८०९	८१०	८११	८१२	८१३	८१४	८१५	८१६	८१७	८१८	८१९	८२०
८२१	८२२	८२३	८२४	८२५	८२६	८२७	८२८	८२९	८३०	८३१	८३२	८३३	८३४	८३५	८३६	८३७	८३८	८३९	८४०
८४१	८४२	८४३	८४४	८४५	८४६	८४७	८४८	८४९	८५०	८५१	८५२	८५३	८५४	८५५	८५६	८५७	८५८	८५९	८६०
८६१	८६२	८६३	८६४	८६५	८६६	८६७	८६८	८६९	८७०	८७१	८७२	८७३	८७४	८७५	८७६	८७७	८७८	८७९	८८०
८८१	८८२	८८३	८८४	८८५	८८६	८८७	८८८	८८९	८९०	८९१	८९२	८९३	८९४	८९५	८९६	८९७	८९८	८९९	९००
९०१	९०२	९०३	९०४	९०५	९०६	९०७	९०८	९०९	९१०	९११	९१२	९१३	९१४	९१५	९१६	९१७	९१८	९१९	९२०
९२१	९२२	९२३	९२४	९२५	९२६	९२७	९२८	९२९	९३०	९३१	९३२	९३३	९३४	९३५	९३६	९३७	९३८	९३९	९४०
९४१	९४२	९४३	९४४	९४५	९४६	९४७	९४८	९४९	९५०	९५१	९५२	९५३	९५४	९५५	९५६	९५७	९५८	९५९	९६०
९६१	९६२	९६३	९६४	९६५	९६६	९६७	९६८	९६९	९७०	९७१	९७२	९७३	९७४	९७५	९७६	९७७	९७८	९७९	९८०
९८१	९८२	९८३	९८४	९८५	९८६	९८७	९८८	९८९	९९०	९९१	९९२	९९३	९९४	९९५	९९६	९९७	९९८	९९९	१०००

[illegible]

५५	५६	५७	५८	५९	६०
५५	५६	५७	५८	५९	६०

[illegible]

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----



ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀਵਨੀ-ਤ-ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ
ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ-ਤ-ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ

सुख चन्द गुरु जगद्वन शशिवा—कर्म, गरिने कुना वा कुनको भाविथार गणसे भ

पर्व। कथाभावे वृद्धयति कुशाख्यां महात्मना। च. र. सु. त्रुण्डनु । निवादिमा वरकाई म
 तुराठम पर्वत मृणालीने पुण्ड । कन्दमा सन्निधा। तुराठनु पर्वे भावे परेमा शीवदेवक पद
 विशेष पूजा मोक्षुर्णदान गये वाचापर्वत ।

